रविवार सत्संग की

ड्यूटी-योग्यता-युक्ति

(सेवा-भाव)

(भाग-2)

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)

रविवार सत्संग की

ड्यूटी-योग्यता-युक्ति

(सेवा-भाव)

(भाग-2)

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)

प्राक्कथन

युग-युग में कुदरती ग्रन्थ आते हैं, जिनमें कुदरत के सत्य का वर्णन होता है और उस वर्णित सत्य को ग्रहण करना मनुष्य जीवन-काल में अति आवश्यक होता है। यहां विडम्बना यह है कि इन ग्रन्थों में वर्णित सत्य को कोई विरला ही समझ व धारण कर पाता है और फिर वह असत्यता में विचरते हुए सजनों को सत्य के संग की प्रवृत्ति में ढालने का सत्संग द्वारा यत्न करता है, ताकि अधिकाधिक सजन सत्वगुणी अर्थात् उत्तम प्रकृति वाले बनें। सत्संग में फिर अध्यात्म-सम्बन्धी चर्चा होती है। इस प्रकार समाज में ऐसी धार्मिक सभा का गठन होता है और उस सभा में आने वाला हर सजन सत्संगी अर्थात् अच्छी संगति में रहने वाला कहलाता है और वह सब से मेल-जोल रखने वाला माना जाता है।

सत्संग एक प्रकार से सजनों का संग साथ है और सत्संग द्वारा ही आत्मतत्व अर्थात् जीवन शक्ति का सत्य रूप से ज्ञान होता है। जो सजन प्रकृति का वह गुण जो अच्छे कामों की ओर प्रवृत्त करता है, उसे धारण कर लेता है तो वह सत्वगुण की प्रधानता के कारण सत्यवान, दृढ़ संकल्प वाला, सदाचारी, धीर, धर्मशास्त्र का ज्ञाता, धर्म करने वाला, धार्मिक शिक्षा देने वाला, पुण्य-कार्य करने वाला, मर्यादा-पुरुषोत्तम कहलाता है। यही श्रेष्ठ गुण-धारी फिर धर्म अधिकारी न्यायाधीश की भांति सत्संग में आने वाले हर सजन की परख कर उसमें निहित सत्य का सरलता व स्पष्टता से बोध कराते हुए सत्संगियों के मन में उस सत्य ज्ञान की उत्तमता जता उसके प्रति उन्हें उमंगित व उत्साहित करता है।

उपरिलिखित उद्देश्य-पूर्ति के लिए सत्संग व्यवस्था का प्रबन्ध सुचारु रूप से बनाए रखने के लिए एक ऐसे विधान की आवश्यकता होती है जो सत्संग के सभी सदस्यों को भली प्रकार से कार्य अथवा आचरण करने के लिए बाध्य करे ताकि हर सजन आदेश पालन की योग्यता से भरपूर हो और उस सजन को मान-अपमान, वड-छोट, अमीरी-गरीबी का भेद-भाव न छू पाए या प्रभावित न कर पाए क्योंकि केवल इसी प्रकार ही सत्संग में समभाव-समदृष्टि और एकता का वातावरण पनप सकता है और बना रह सकता है। इसीलिए इस पुस्तक की

रचना आवश्यक समझी गई ताकि हर सभा संचालक का प्रयत्न फलीभूत हो और कलयुगी-जीवों का उद्धार हो सके। उनके हृदय में भी प्रकाश-किरण ज्योति-पुंज हो उठे और वे इसी जीवन में समवृत्ति एवं समदृष्टि बन इस मनुष्य चोले का भरपूर आनन्द और सुख मान सकें।

इस सन्दर्भ में सेवा-भाव का महत्व देखते हुए सत्संग की सत्संगियों द्वारा हर प्रकार की सेवा का वर्णन कर उनको उस सेवा के लिए योग्यता और युक्ति के प्रति जागरूक बनाए रखने के लिए प्रयास किया गया है। इसीलिए अब हर सजन का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस पुस्तक में लिखित विधान का गंभीरता और निर्भयता से पालन करता हुआ, सत्संग में आने वाले हर सत्संगी को आत्मिक उन्नति प्रदान करने के लिए "मैं" को त्याग कर, सहनशील बन निष्काम-भाव से अपनी योग्यता अनुसार सेवा करे ताकि हर मन, परिवार और कुल संसार में शांति का साम्राज्य स्थापित हो। **यही सतयुग है, क्योंकि :**

सतवस्तु में विचार ते सतजबान होसी,
एक दृष्टि एकता महान होसी,
न जप, न तप, न भजन, न बन्दगी,
एक अवस्था ओ जगत जहान होसी।

जिससे हर सजन अपनी असलियत की पहचान कर, जेहड़ा मन-मन्दिर प्रकाश है ओही असलियत ज्योति-स्वरूप मेरा अपना आप, पर खड़ा हो एक निगाह एक दृष्टि और एक दर्शन पर परिपक्वता से ठहर जड़-चेतन में, उसी एक दर्शन का आभास कर सजन-भाव में गुढ़ सकेगा। **याद रखो:-**

असलियत स्वरूप है जे ब्रह्म
जैंदा रूप रेखा नहीं रंग।
ईश्वर है अपना आप प्रकाश
ईश्वर है जे अजपा जाप।
विचार ईश्वर आप नूं मान
विचार ईश्वर आप नूं ही मान।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	ड्यूटी का विषय	पृष्ठांक
1.	ड्यूटी लगाना	1
2.	बिछाई करना व सत्संग की समाप्ति पर बिछाई समेटना	2-3
3.	पुस्तक उठाना और चंवर झुलाना	4-5
4.	विधि करना व कीर्तन बोलना	6-7
5.	साज (हारमोनियम, ढोलक व रोड़ा) बजाना	8
6.	सभा में मौनव्रत देखना, हाजरी लेना, सजनों को अनुशासित ढंग से रखना, चोले पाना व रूमाले आदि देना	9-10
7.	शास्त्र पढ़ना	11
8.	प्रशाद देना	12
9.	खजाने का रख-रखाव	13
10.	जोड़ों पर	14
11.	पानी पिलाना	15
12.	बिजली - माईक का प्रबंध	16

सत्संग आरम्भ होने का समय:

दोपहर ढाई बजे

सत्संग समाप्ति का समय:

सायं पांच बजे

इतवार के सत्संग की सभी नीतियां पुरूष सजनों ने 'सतवस्तु के सत्संग की विधियाँ' वाली पुस्तक में वर्णित विधि के अनुसार ही करनी है।

ड्यूटी लगाना 1

योग्यता

(1) पांच प्यारों में से एक (2) निष्ठावान यानि धर्म के प्रति सत्यनिष्ठ हो (3) नीतिवान (4) उदर पात्र बड़ा अर्जुन वाला होवे (5) दूरदर्शी यानि सजग, सचेत और जागरुक होना (6) स्वतन्त्र बुद्धि से निर्णायक क्षमता धारण किए हुए रहना (7) परोपकारी प्रवृत्ति होना (8) आद् से कंचन हो (9) नामी जो गाना पहने हुए हो (10) शांति प्रिय 'हौं' 'मैं' से रहित हो (11) गृहस्थ आश्रम ठीक होना (12) मधुरभाषी (13) ड्यूटी के प्रति ज्ञान हो (14) इच्छुक (15) प्रेमी व श्रद्धावान (16) सादगी प्रिय (17) निष्काम।

युक्ति

किसी भी सजन को ड्यूटी देने से पहले उसको उस सेवा के प्रति स्पष्ट व सजग करना। युक्ति को कंठस्थ कराना और फिर सेवा धर्म का पालन कराते हुए उस पर नजर रखना कि वह कार्य सुचारू रूप से कर रहा है या नहीं। त्रुटि होने पर सही समय पर उसका उचित मार्गदर्शन करना।

बिछाई करना व सत्संग की समाप्ति पर बिछाई समेटना 2

योग्यता

(1) ड्यूटी के प्रति ज्ञान होना (2) शुद्ध आचरण वाला होना (3) नामी होना (4) प्रेमी (5) इच्छुक (6) सादगी प्रिय।

युक्ति

पांच प्यारों में से एक सजन को चाहिए कि वह बिछाई वाले दो सजनों की ड्यूटी एक सप्ताह पहले से ही निर्धारित कर दे जिससे वह बिछाई की तैयारी में जुट जाए। ड्यूटी वाले सजन ने बिछाई करने वाले सजन को सात दिन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने को कहना है। बिछाई वाले सजन ने सातों दिन शोक वाली जगह पर नहीं जाना। रोने-झुखने आदि के स्वभाव से बच कर रहना है।

बिछाई से पूर्व नाम अक्षर जप जप कर अपने अन्दर इतना प्रेम बना ले कि बिछाई के समय अफुर अवस्था बनी रहे। इसके लिए गृहस्थ में शांत वातावरण होना आवश्यक है। बिछाई की ड्यूटी करने के लिए घर से आते समय हृदय में नाम अक्षर चलाते हुए आना है। मार्ग में किसी से कोई बात नहीं करनी। बिछाई आरम्भ करने से पहले प्रार्थना व चरण-शरण करके मन में सात बार 'साडा है सजन राम-राम है कुल जहान' कर लेना है। फिर इसी तरह मौनव्रत धार कर नाम अक्षर चलाते हुए सिर ढक के बिछाई 'हौं' 'मैं' के भाव से रहित होकर की जानी चाहिए, इस बात का विशेष ध्यान रखना है। क्योंकि बिछाई करने वाले सजन के प्रेम पर ही संगत का प्रेम और प्रकाश निर्भर करता है। इसलिए बिछाई एक सेवा होते हुए भी एक प्रकार का परोपकार है। ध्यान रहे बिछाई में कहीं भी कोई सिलवट या किसी प्रकार की लेश मात्र भी कोई गंदगी न हो। बिछाई के दौरान प्रसन्नचित बने रहना है। बड़े ही प्रेम में आकर बिछाई करनी है। बिछाई करने वाले सजन ने ही विधि से पूर्व सजावट के लिए हार

संगत के लिए मिश्री व इलायची, पानी पिलाने के लिए बर्फ लानी है। जो सजन बिछाई करेंगे वही सजन सत्संग की समाप्ति पर बिछाई उसी प्रेम व श्रद्धा भाव से समेट कर यथास्थान भी रख कर जाएंगे।

पुस्तक उठाना और चंवर झुलाना 3

योग्यता

(1) बिछाई करने वाले सजन (2) ड्यूटी के प्रति ज्ञान होना (3) नामी होना (4) शुद्ध आचरण वाला होना (5) प्रेमी (6) श्रद्धावान (7) इच्छुक (8) स्वस्थ (दोनो शारीरिक व मानसिक रूप से) (9) पूर्णतया-जागरूक व सचेत (10) सादगी प्रिय।

युक्ति

सिर ढक के सजन ने प्रार्थना, चरण-शरण, पांच जयकारे लगाने के पश्चात् एक ने शास्त्र सीस पर धारण करना है और दूसरे ने कीर्तन वाली पुस्तकों को सीस पर धारण कर हाथ में चंवर ले, शास्त्र पर चंवर झुलाते हुए धीरे-धीरे विश्रामपूर्वक स्टेज की ओर यह कीर्तन बोलते हुए आगे बढ़ना है:-

"चलो चलिए सजन महाबीर जी दे पास दासियां रल चलिये"

आवश्यकता पढ़ने पर पांच प्यारों में से एक सजन इन ड्यूटी वाले सजनों की सहायता कर सकता है। स्टेज के पास पहुंच फिर से पांच जयकारे लगाने के पश्चात् शास्त्र को सिंहासन पर विराजमान करना है और साथ साथ

"जय सीता राम - जय सीता राम - जय सीता राम बोल..."

बोलते रहना है। फिर स्टेज पर बैठ शास्त्र का प्रकाश करना है और उस पर नीतिनुसार चंवर झुलाते रहना हैं ध्यान रहे मन में नाम-अक्षर चलता रहे और प्रेम उछाले मारे। चेहरे पर मुस्कुराहट हो। चंवर झुलाने वाले सजन ने विधि संगत के साथ-साथ बोलते रहनी है ताकि उसे नींद न आए और फुरना न सताए।

इस सजन ने आंखें बंद कर सजग और सचेत बैठना है और यदि नींद आने लगे तो आंखें खोल लेनी है। शास्त्र व पुस्तक उठाने और चंवर करने

वाले सजन की ड्यूटी है कि वही सजन समाप्ति पर पुस्तकों और शास्त्र को नीतिनुसार लपेट कर उसी प्रेम व श्रद्धा भाव से विधिनुसार जो बोलना है वह बोलते हुए सवारी यथास्थान रख कर ही घर जाए।

विधि करना व कीर्तन बोलना 4

योग्यता

(1) नामी, प्रेमी व श्रद्धावान (2) शब्द उच्चारण स्पष्ट व शुद्ध हों (3) सुरों का ठीक ज्ञान हो (4) आवाज सुरीली व मीठी हो (5) शब्दों के साथ जुड़ कर बोल सकता हो (6) उसे विधि पूरी जबानी कंठस्थ हो (7) 'हौं' 'मैं' से रहित (8) धैर्यवान (9) शांतिप्रिय (10) सादगी प्रिय (11) स्वच्छता (अन्दरूनी, जिव्हा, ख्याल, दृष्टि और संकल्प की बैहरूनी शारीरिक व रैहणी-बैहणी की) (12) गृहस्थ आश्रम में ठीक विचरता हो (13) शुद्ध आचरण हो।

युक्ति

विधि व कीर्तन बोलने वाले सजन ने सिर ढक कर विधि बोलनी आरम्भ करनी है। विधि व कीर्तन बोलते समय सजन के चेहरे पर मुस्कुराहट होवे। संगत को भी कहना है कि पीछे से मुस्कुराहट से ही उत्तर देवे। इस तरह सारी सभा में प्रसन्नता का वातावरण बनेगा। यह सीख सब सजनों ने लेनी है और मुस्कुराहट का स्वभाव अपनाए रखना है। विधि या कीर्तन बोलते समय बोले जाने वाले शब्दों के भावों को समझते हुए जो उसमें वर्णित है, उसका अपने अन्दर अनुभव करते हुए बोलना है। बोलते समय ऐसा प्रतीत हो जैसे बोलने वाला सजन वैसा समक्ष देख रहा है और संगत के सजनों को बता रहा है। कुदरती शास्त्र के एक-एक शब्द को बोलते समय उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट हो ताकि सुनने वालों को उन शब्दों द्वारा बताए जाने वाले ज्ञान की सूक्ष्मता समझ में आए। बोलते समय सभा को निरन्तर जागरूक व उत्साहित रखना है ताकि उनके अन्दर प्रेम उमड़े, उछाले मारे और जिस प्राप्ति के लिए वे सत्संग में आते हैं, उनको मिल जाए। कीर्तन बोलते समय कोई भी शब्द अपनी तरफ से नहीं जोड़ना। लय की गति सत्संग के प्रेम-भाव को समझते हुए ऊपर नीचे ले जानी है। कीर्तन आरंभ होने से पहले ही जो जो उस दिन बोलना है, पुस्तक में निशानी रख लेनी है ताकि कीर्तन एक पल के लिए भी न रुके। यह निरन्तरता बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है, क्योंकि कीर्तन रुकने का अर्थ है सजनों की वृत्ति रुक जाना जो हानिकारक साबित होती है। कीर्तन तन्मयता से बोलना

है। स्टेज पर बैठकर कोई आपसी बातचीत व ईशारे नहीं करने। विधि करने वाले को चाहिए कि वह पहले से ही साज अर्थात् ढोलक बाजा आदि बजाने वालों के साथ बोलने का अभ्यास कर ले ताकि साज का ताल मेल टूटने से सजनों के प्रेम की तार न टूटे। याद रहे कीर्तन केवल शास्त्र में से ही बोलने हैं और यह भी ध्यान रहे कि सत्संग के दौरान संगत विश्राम में रहे। कीर्तन में से क्रमशः आगे बढ़ते हुए अर्थात् युक्तिसंगत वृत्ति को ऊंचा उठाने के लिए ठीक निर्धारित लय में बोलने हैं ताकि सत्संगियों में प्रेम और उत्साह बना रहे।

नोट : कीर्तन बोलने वाला सजन ध्यान में रखे कि हर साल सावन की मीटिंग के बाद आने वाले इतवार से कलुकाल के कीर्तन बोलने शुरू करने हैं। यह कीर्तन क्रम से बोलने हैं। आगे पीछे नहीं बोलने। यह कीर्तन इस कीर्तन से शुरू होते हैं :-

'हे स्वामिन कलयुग नूं आप हटा, नारद जी रहे ने बता'।

हर महीने अंग्रेजी तारीख के पहले इतवार को शास्त्र पढ़ने से पहले निम्नलिखित दोनों कीर्तन बोलकर :-

i) **'किस तरह बताऊं दुनिया दी बात, किस तरह बताऊं दुनिया दी हालत'**
ii) **'वक्त दे मुताबिक ओ सजन सब कोई प्यार करता है.....'**

सावन की मीटिंग का और बुजुर्गों की सेवा का पर्चा पढ़कर सुनाना है।

साज (हारमोनियम, ढोलक व रोड़ा) बजाना

5

योग्यता

(1) साज बजाने में अनुभवी हों (2) नामी प्रेमी व श्रद्धावान हों (3) सुरों का ठीक ज्ञान हो (4) शब्दों के साथ जुड़ कर साज बजा सकता हो। (5) शब्द उच्चारण शुद्ध-स्पष्ट हो (6) 'हौं' 'मैं' से रहित (7) स्वस्थ हो (8) धैर्यवान (9) शांतिप्रिय (10) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी जिव्हा की ख्याल संकल्प की व दृष्टि की ओर बैहरूनी शरीर की) (11) सादगी प्रिय (शुद्ध आचरण वाला हो)।

युक्ति

हारमोनियम बजाने वाले सजन ने आवाज और सुर का तालमेल एकरस रखना है ताकि एक-एक शब्द संगत को स्पष्टता से सुनाई दे। ढोलक की ताल का तालमेल, स्टेज से उच्चरित हो रहे शब्दों व लय से होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए ढोलक वाले सजन का ध्यान स्थिर बना रहे और स्टेज से उच्चरित लय उसके मस्तिष्क में गूंजती हुई ढोलक पर ताल दे। इस क्रिया को सक्रियता से निभाने के लिए ढोलक वाला सजन आंखे बंद कर के निभाने में सक्षम हो तो अच्छा है, वरना आंखें खोल कर स्टेज पर बोलने वाले सजन की तरफ देख सकता है। स्टेज से बुलने वाले हर शब्द का उत्तर उसी लय में देने से इस क्रिया में और भी गति बन सकती है। यहां यह याद रहे शब्द उच्चारण हर सजन को ठीक प्रकार से समझ आए। इसके लिए साज नर्म रखना है और रोड़ा न ही बजाएं तो अच्छा है।

सभा में मौनव्रत देखना, हाजरी लेना, सजनो को अनुशासित ढंग से रखना, चोले पाना व रूमाले आदि देना

6

योग्यता

(1) पांच प्यारों में से एक (2) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी - संकल्प, ख्याल, दृष्टि और जिव्हा की व बैहरूनी - शारीरिक तथा रैहणी-बैहणी की) (3) ठहराव हो (4) कर्तव्यपरायण यानि अनथक हो (5) शांतिप्रिय (6) धैर्यवान (7) मुंह मुलाजा न रखने वाला (8) समवृत्ति यानि सजनता व समभाव में ठहरे हुए तथा सदभावना से प्रेरित (9) निडर और साहसी (10) सचेत और जगरूक (11) नम्र, मधुरभाषी (12) निष्पक्ष (13) शुद्ध आचरण वाला हो।

युक्ति

यह कार्य उसने आंखें खोल कर, सतर्कता से चारों तरफ दृष्टि रख के करना है। ध्यान रखना है कि हर सजन पंक्तिबद्ध मौनव्रत में बैठे। यहां मौनव्रत का अर्थ है कि केवल वही बोलना है जो स्टेज से कीर्त्तन आदि बोला जाए। अन्य कोई बातचीत नहीं करनी। कोई लाचारी की बात हो तो सजन इतने धीरे से करें कि तीसरा सजन न सुन पाये। ध्यान रखें कि सजन हिले जुले और ठैं-ठैं नहीं करे। मौनव्रत धारे रहें चूं-चां न करें।

कहीं शोर या किसी बच्चे आदि का रोना हो तो उन्हें हाथ जोड़ कर शांत अवस्था में ले आना है और बच्चे वाली को थोड़ी देर के लिए उठकर बाहर जाने को कह देना है। इसी सजन ने ही यह ध्यान रखना है कि हर सजन कीर्तन का उत्तर प्रेम से दे, कोई सोए नहीं। कीर्त्तन की समाप्ति के समय जिस सजन ने रुमाला चढ़ाना हो वह रुमाला इसी सजन से ले और यही सजन उन्हें पंक्तिबद्ध कर आगे भेजेगा। भीड़ व धक्का न हो। हर आने जाने वाले पर नजर रखनी है कि कोई मान-हानि न हो। सत्संग पर आने वाले हर नामी सजन की हाज़री भी इसी सजन ने रजिस्टर में लगानी है। हाज़री जिस वक्त साडा है सजन राम राम है कुल जहान' बुले तो ही लगानी

है। जो देर से आएं उन सजनों को पीछे ही बिठाना है। इस बात का ध्यान रखना है कि सब सजन आंखें बंद कर के बैठें।

रूमाले के पैसे इस सजन ने सजनों से हैसियत अनुसार लेने है।

शास्त्र पढ़ना 7

योग्यता

(1) नामी (2) प्रेमी व श्रद्धावान (3) धैर्यवान व शांतिप्रिय (4) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी जिव्हा की ख्याल की दृष्टि की और बैहरूनी शरीर की) (5) हौं मैं से रहित (6) गृहस्थ आश्रम में ठीक विचरता हो (7) स्वस्थ (8) शुद्ध आचरण वाला हो।

युक्ति

जिस सजन को रामायण व शास्त्र ठीक लय से पढ़ना आता है उस सजन ने पहले महाबीर जी के सिंहासन के आगे सीस झुकाकर तथा "धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चेपातशाह जी" दो बार बोल कर रामायण का राजतिलक प्रसंग सहित पढ़ना है। पढ़ने में एकरसता हो। बड़े प्रेम में आकर ध्यान ईस्थर कर अफुर अवस्था में ठहरे रहना है। अनुभव यह करना है कि महाराज जी हृदय में विराजमान हैं। ख्याल इसी अनुभव में ठहरा रहे। शब्द उच्चारण स्पष्ट और शुद्ध हो।

शास्त्र पढ़ने की समाप्ति पर शास्त्र पढ़ने वाले सजन ने 'सरस्वती कंचन होवे....' बोलना है और साथ ही साथ रूमाले से प्रकाशित शास्त्र को ढक देना है।

प्रशाद देना 8

योग्यता

(1) नामी हो (2) समवृत्ति शांतिप्रिय (3) संतोषी, धैर्यवान (4) ड्यूटी के प्रति ज्ञान हो (5) मधुरभाषी, विनयशील (6) स्वच्छ व स्वस्थ (7) प्रेमी व श्रद्धावान (8) प्रसन्नचित (9) सादगीप्रिय (10) ठहराव हो (11) शुद्ध आचरण वाला हो।

युक्ति

चूंकि इतवार को मंगलवार का प्रशाद ही बांटना होता है इसलिए मंगलवार, विधिनुसार भोग लगे प्रशाद की पहले से ही कुछ टुकड़ियां निकालकर अलग डिब्बी में रख दी जाती हैं। वही प्रशाद जो सजन मंगलवार सत्संग में नहीं आए होते उन सजनों को देना होता है। प्रशाद एकरस देना है। प्रशाद बांटते समय संगत में पूर्ण विश्राम होवे। प्रशाद पीछे से बांटना शुरू करना है ताकि खलबली न होवे। प्रशाद उन्हीं सजनों को देना है जो सभा में आए। जो सभा में न आए उनके लिए प्रशाद घर के सजनों को नहीं देना। प्रशाद केवल सत्संग की समाप्ति पर ही देना है। शेष सत्संग द्वारा चढ़ाया हुआ प्रशाद मालिक के प्यारों में बांट देना है।

खजाने का रख-रखाव 9

योग्यता

(1) पांच प्यारों में से तीन सजन (2) द्वारे की चाल को समझते हों (3) नामी सजन, गाना पहने हुए (4) निष्ठावान, धर्म परायण हो (5) ईमानदार (6) सच्चाई पर परिपक्व हो (7) सचेत सजग व जागरूक (8) समझदार (9) मित्व्ययी।

युक्ति

मालिक के प्यारो की अमानत में खयानत नहीं होनी चाहिए। तीन नामी सजन जिन्हें खजाने की ड्यूटी मिली हुई हो उन में से एक सजन बड़ा सचेत, सजग और सावधान होकर थाली के आगे बैठे। थाली में पैसे ज्यादा हो जाएं तो सजन थाली के पैसे गुत्थी में डालता जाए और गुत्थी सत्संग समाप्ति तक संभाल कर रखे। सत्संग की समाप्ति पर खजाने वाले सजन खजाना गिन कर उसे कापी में नोट कर लें।

तीन ड्यूटी वाले सजनों में से एक के पास खजाने का हिसाब हो, दूसरे के पास चाबी व तीसरे के पास पैसा हो।

थाली के खजाने में से सजनों को पैसे नहीं तुड़वाने क्योंकि कोई किसी भावना से माथा टेकता है कोई किसी भावना से। यह सावधानी अत्यन्त आवश्यक है।

इन सजनों ने संगत से मासिक चंदा भी नियमानुसार एकत्रित करना है।

जोड़ों पर 10

योग्यता

(1) प्रौढ़ अवस्था में हो (2) ईमानदार, किसी का मुंह मुलाजा न करने वाला (3) कर्तव्यपरायण (4) शुद्ध आचरण हो (5) नम्र भाव हो (6) दृष्टि कंचन हो (7) मधुरभाषी हो (8) धैर्यवान (9) स्वस्थ (10) स्वच्छ (11) अनुशासित (12) शांतिप्रिय।

युक्ति

कार्य करने से पहले प्रार्थना, चरण-शरण और सात बार साडा है सजन राम-राम है कुल जहान करके इस सेवा के महत्व को समझते हुए पूरी निष्ठा से ड्यूटी आरम्भ करें। जोड़ों की ड्यूटी में कम से कम दो सजन होवें। एक सजन जोड़ा लेता जाए व लाईनों में नम्बर से रखता जाए और दूसरा सजन टोकन सजनों को देता जाए टोकन के दो सैट हों। एक जोड़ों पर सजन रखता जाए और दूसरा संगत को देता जाए। इससे कार्यविधि में आसानी होगी। दोनों टोकनों के एक होने पर ही सजनों को जोड़े वापिस करे।

ड्यूटी करते समय मन में नाम अक्षर चलता रहे। ध्यान जुड़ा रहे और बातचीत में जी-जी का व्यवहार हो। सजन ने ड्यूटी के दौरान शांत व विनम्र बने रहना है।

पानी पिलाना 11

योग्यता

(1) प्रौढ़ अवस्था में हो (2) ईमानदार, सजन भाव में परिपक्व (3) कर्तव्यपरायण (4) शुद्ध आचरण वाला (5) नम्र भाव हो (6) दृष्टि कंचन हो (7) मधुरभाषी हो (8) धैर्यवान (9) स्वस्थ (10) स्वच्छ (11) अनुशासित (12) शांतिप्रिय।

युक्ति

कार्य करने से पहले प्रार्थना, चरण-शरण कर 'सात बार साडा है सजन राम-राम है कुल जहान" मन में कर लें। अपनी सेवा के महत्त्व को समझते हुए उसे पूरी निष्ठा से निभायें।

पानी पिलाने वाले सजन को सफाई का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। अपनी शारीरिक सफाई एवं पानी पिलाते समय गिलास आदि की सफाई। ड्यूटी करते समय जी जी का वर्त्तवर्ताव हो और मन में नाम अक्षर चलता रहे। शान्ति और ठहराव का स्वभाव अपनाए रखें। जब सत्संग में कीर्तन के समय सजन प्रेममय हों तो उस वक्त पानी नहीं पिलाना।

ध्यान रहे पानी में लाल दवाई का उचित मात्रा में इस्तेमाल करना है और पानी से भरे पात्र को सफेद मलमल के कपड़े से ढक कर रखना है ताकि कोई मिट्टी का धूल-कण या कीटाणु आदि पानी को अशुद्ध न कर सके।

बिजली - माईक का प्रबन्ध 12

योग्यता

(1) बिजली कार्यों सम्बन्धी समस्त बातों की पूर्ण जानकारी व सूझबूझ हो और बिजली के उपकरणों का ज्ञान हो (2) सतर्क और जागरुक हो (3) ड्यूटी के प्रति ज्ञान हो (4) समस्त कार्य सुचारू रूप से हो (5) समझदार (6) धैर्यवान, मधुरभाषी, विनम्र हो (7) नामी हो।

युक्ति

बिजली की ड्यूटी वाले सजन ने समय पर ही सारा बिजली लगाने का प्रबन्ध कर लेना है। यह सारा काम विश्राम के साथ करना है ताकि करंट न लगे इसी प्रकार तार के हर जोड़ पर या अन्य उचित स्थानों पर टेप ठीक ढंग से लगाना है ताकि किसी सजन को भी करंट से नुकसान न हो और न ही कोई बिजली का करंट आने में कोई खराबी हो। इसी प्रकार लाऊडस्पीकर लगाने आदि का काम सुचारू रूप से करना आवश्यक होता है क्योंकि लाऊडस्पीकर के जरिए जितनी आवाज स्पष्टता से एकरस जाएगी उतना ही संगत को अच्छा समझ आएगा और उनका सत्संग में ध्यान जुड़ा रहेगा। ध्यान रहे लाऊडस्पीकर का प्रबन्ध इस प्रकार करना है कि कीर्तन के दौरान एक सैकिण्ड के लिए उसमें रुकावट न आए। फिर कीर्तन की समाप्ति के बाद बिजली का सामान और लाऊडस्पीकर ठीक प्रकार से उतार कर यथास्थान संभाल कर रखना है ताकि किसी किस्म का नुकसान न हो और जरूरत पढ़ने पर हर चीज आराम से मिल जाए। लाऊडस्पीकर और बिजली के सारे सामान की लिस्ट अपने पास बनाकर रखनी है। यह सारा कार्य ड्यूटी वाले सजन ने मन में नाम अक्षर चलाते हुए करना है।